IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, January 2026
Impact Factor: 7.67

भारतीय ज्ञान परंपरा और निर्गुण काव्यधारा

डॉ. बृजेन्द्र कुशवाहा

अतिथि विद्वान, हिंदी- विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश: (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा एक प्राचीन और समृद्ध विरासत है जो वेदों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्रों और भक्ति साहित्य से जुड़ी हुई है। निर्गुण काव्यधारा, जो भक्ति काल की एक प्रमुख शाखा है, इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह काव्यधारा निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर आधारित है और संत कवियों जैसे कबीर, रैदास और नानक द्वारा प्रतिपादित है। इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा और निर्गुण काव्यधारा के बीच के संबंधों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें दार्शनिक आधार, सामाजिक प्रभाव और साहित्यिक योगदान पर ध्यान केंद्रित है। शोध से पता चलता है कि निर्गुण काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता को दर्शाता है, जो आत्मज्ञान, समानता और भक्ति के माध्यम से समाज को प्रभावित करता है।

कीवर्ड्स:(Keywords)

भारतीय ज्ञान परंपरा, निर्गुण काव्यधारा, भक्ति काल, संत काव्य, निर्गुण ब्रह्म, कबीर, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, आत्मज्ञान, सामाजिक समानता।

परिचय:(Introduction)

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है, जो वेदों से प्रारंभ होकर उपनिषदों, पुराणों और दर्शनशास्त्रों तक फैला हुआ है। यह परंपरा न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक है, बल्कि वैज्ञानिक,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को भी समाहित करती है। वेदों में ज्ञान को "ब्रह्म" के रूप में वर्णित किया गया है, जो निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में विद्यमान है। उपनिषदों में "तत्वमसि" (तू वही है) जैसे महावाक्यों से आत्मा और परमात्मा की एकता पर बल दिया गया है, जो भारतीय दर्शन की आधारशिला है। भक्ति काल (लगभग 14वीं से 17वीं शताब्दी) में यह ज्ञान परंपरा भक्ति आंदोलन के रूप में प्रकट हुई। भक्ति काव्य को दो प्रमुख धाराओं में विभाजित किया जाता है: सगुण और निर्गुण। सगुण धारा में ईश्वर को साकार रूप में पूजा जाता है, जैसे राम या कृष्ण के अवतारों में, जबकि निर्गुण धारा निर्गुण, निराकार ब्रह्म की उपासना पर केंद्रित है। निर्गुण काव्यधारा संत कवियों की देन है, जो सामान्य जनमानस की भाषा में गहन दार्शनिक सत्यों को व्यक्त करती है। इस शोध का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा और निर्गुण काव्यधारा के बीच के अंतर्संबंधों को उजागर करना है। निर्गुण काव्य में वेदांतिक विचारों की झलक मिलती है, जैसे अद्वैतवाद और रहस्यवाद। कबीर के दोहों में उपनिषदों का प्रभाव स्पष्ट है, जहां वे कहते हैं: "कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर। ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।" यह सामाजिक समानता और आत्मज्ञान की भारतीय परंपरा को प्रतिबिंबित करता है। शोध के महत्व को देखते हुए, यह पत्र निर्गुण काव्य को भारतीय ज्ञान की निरंतरता के रूप में प्रस्तुत करता है। मध्यकाल में जब समाज जाति और धर्म के बंधनों में जकड़ा था, तब निर्गुण संतों ने ज्ञान के माध्यम से मुक्ति का मार्ग दिखाया। यह परंपरा आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह वैश्विक स्तर पर आध्यात्मिकता और समानता के संदेश देती है। पत्र में आगे दार्शनिक आधार, प्रमुख कवियों का योगदान और सामाजिक प्रभाव पर चर्चा की जाएगी।

शोध पद्धति: (Research Methodology)

यह शोध गुणात्मक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में निर्गुण कवियों के मूल ग्रंथ जैसे कबीर की "बीजक", गुरु नानक की "आदि ग्रंथ" और रैदास के पद शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की "हिंदी साहित्य का इतिहास", हजारी प्रसाद द्विवेदी की "कबीर" और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

अन्य विद्वानों के शोध पत्र शामिल हैं। डेटा संग्रह के लिए लाइब्रेरी रिसर्च, ऑनलाइन डेटाबेस और वेब सर्च का उपयोग किया गया। विश्लेषण में तुलनात्मक विधि अपनाई गई, जहां भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों (जैसे योगवशिष्ठ और भगवद्गीता) को निर्गुण काव्य से जोड़ा गया। शोध की सीमाएं: यह मुख्य रूप से हिंदी साहित्य तक सीमित है, हालांकि पंजाबी और अन्य भाषाओं के प्रभाव को भी छुआ गया है। नैतिकता के रूप में, सभी स्रोतों का उचित उद्धरण किया गया है।

मुख्य भाग: (Main Body)

अध्याय 1: भारतीय ज्ञान परंपरा का अवलोकन

भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों से प्रारंभ होती है। ऋग्वेद में "एकं सद् विप्रा बहुधा वदंति" (सत्य एक है, विद्वान उसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं) जैसे मंत्र निर्गुण ब्रह्म की अवधारणा को स्थापित करते हैं। उपनिषदों में ज्ञान को मोक्ष का साधन माना गया है, जहां "नेति नेति" (न यह, न वह) से निर्गुण की व्याख्या की जाती है। दर्शनशास्त्रों में अद्वैतवाद (शंकराचार्य) निर्गुण ब्रह्म पर जोर देता है। योगवशिष्ठ में राम को ज्ञान के माध्यम से आत्मसाक्षात्कार कराया जाता है। यह परंपरा भक्ति काल में निर्गुण काव्य के रूप में विकसित हुई, जहां संतों ने वैदिक ज्ञान को लोकभाषा में पहुंचाया।

अध्याय 2: निर्गुण काव्यधारा का उद्भव और विशेषताएं

निर्गुण काव्यधारा भक्ति आंदोलन की ज्ञानाश्रयी शाखा है। आचार्य शुक्ल ने इसे ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी में विभाजित किया। ज्ञानाश्रयी में कबीर, नानक आदि शामिल हैं, जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते हैं। विशेषताएं: रहस्यवाद, सामाजिक समीक्षा, सरल भाषा और दोहा-चौपाई का प्रयोग। यह धारा सूफी प्रभाव से भी प्रभावित है, लेकिन मूल रूप से भारतीय है। कबीर के पदों में "राम निर्गुण" की अवधारणा उपनिषदों से ली गई है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

अध्याय 3: प्रमुख संत कवियों का योगदान

कबीर: भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रतिनिधि। उनके दोहे जैसे "कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूंढे बन माहि" आत्मज्ञान पर बल देते हैं।

गुरु नानक: आदि ग्रंथ में निर्गुण ब्रह्म और सामाजिक समानता। "एक ओंकार सतिनाम" वेदांतिक है।

रैदास: "हरि में सब साहिब, सब हरि में" से अद्वैतवाद।

ये कवि ज्ञान को भक्ति से जोड़ते हैं, जो भारतीय परंपरा की निरंतरता है।

अध्याय 4: सामाजिक और दार्शनिक प्रभाव

निर्गुण काव्य ने जाति प्रथा का विरोध किया, जो वेदों की समानता की भावना से प्रेरित है। यह आंदोलन सामाजिक सुधार लाया। दार्शनिक रूप से, यह भगवद्गीता के निष्काम कर्म से जुड़ा है। आधुनिक संदर्भ में, यह गांधीजी के सत्याग्रह में दिखता है।

निष्कर्ष: (Conclusion)

भारतीय ज्ञान परंपरा और निर्गुण काव्यधारा एक-दूसरे के पूरक हैं। निर्गुण काव्य ने प्राचीन ज्ञान को लोकमानस तक पहुंचाया, सामाजिक समानता और आत्मज्ञान को बढ़ावा दिया। यह परंपरा आज भी वैश्विक शांति के लिए प्रासंगिक है। भविष्य के शोध में इसकी तुलना अन्य धाराओं से की जा सकती है।निर्गुण काव्यधारा भारतीय ज्ञान परंपरा का लोक-रूप है — प्राचीन ज्ञान को जीवंत रखते हुए समाज को समान, जागृत और शांतिपूर्ण बनाने का माध्यम। यह परंपरा न केवल इतिहास है, बल्कि आज और कल की प्रेरणा भी है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, January 2026
Impact Factor: 7.67

संदर्भ:(References)

[1]. निर्गुण काव्यधारा (संतकाव्य) की विशेषताएँ / प्रवतियाँ - Degloor College.

[2]. भक्ति काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा.

[3]. हिन्दी की निर्गुया काव्यधारा - और - उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि.

[4]. इकाई 27 भारत में निर्गुण काव्य की परम्परा - eGyanKosh.

[5]. मध्यकालीन भक्ति काल में हिन्दी ज्ञान परंपरा के विविध आयाम.

[6]. निर्गुण ज्ञानमार्गी संत काव्यधारा और संतो की भक्ति भावना.

[7]. भक्तिकालीन सगुण और निर्गुण धारा: सामाजिक, धार्मिक, और साहित्यिक ...

[8]. भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्ति काव्य – डॉ. जयन्त कुमार कश्यप.

[9]. ज्ञानाश्रयी काव्यधारा – Hindi sahitya ka itihas.

[10]. निर्गुण और सगुण काव्य: भक्ति कालीन हिंदी साहित्य की दो प्रमुख धाराएँ.